वर्ष 5 अंक 1-4, वर्ष 6 अंक 1-4
वर्ष 7 अंक 1-4 संयुक्तांक 2017-2019

ISSN 2349-3062

नज़रिया

नई सदी के लिए

बोडो अंक

नज़रिया

नई सदी के लिए

वर्ष 5 अंक 1-4, वर्ष 6 अंक 1-4
वर्ष 7 अंक 1-4 संयुक्तांक 2017-2019

ISSN 2349-3062

सम्पादकीय परामर्शी
ईशामधु तलवार
प्रो. अनिल राय
सत्यानंद सिंह निरुपम

सम्पादक
दिनेश चारण

कार्यकरी सम्पादक
दुष्यंत
अतिथि सम्पादक
जैश्री बोड़ो

सम्पर्क
43-17-5, स्वर्ण पथ
मानसरोवर, जयपुर-20
drdineshcharan@gmail.com
+91 98294 92625
dr.dushyant@gmail.com
+91 98290 83476

मूल्य
450/-

'नज़रिया' मे प्रकाशित लेखों/ रचनाओं में व्यक्त विचार/ तत्थ लेखकों के अपने हैं। प्रकाशक या सम्पादक मण्डल से इनकी सहमति होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका संपादन-संचालन-प्रकाशन पूर्णतया अव्यवसायिक है, सभी पद अवैतनिक हैं।

संपादकीय

हम कोशिश में रहते हैं कि विशेषांकों पर काम किया जाए, किसी खास फोकस के साथ गहन और व्यापक नजरिया बने। उसी कड़ी में हमारा यह विशेषांक है जो उत्तर पूर्वी भारत के बोड़ो क्षेत्र की रचनाशीलता पर केंद्रित है।

इस अंक की पृष्ठभूमि बनने में शायद 2 पहलुओं का विशेष योगदान रहा है, पहला तो यह कि मशहूर फिल्म गीतकार निर्देशक और लेखक गुलजार साहब ने कुछ समय पहले उत्तर पूर्व की कविताओं को अलग से रेखांकित करते हुए कहा था– "मैं हैरान हूं कि यहां की कविताओं में कितनी विविधता है और कितना अलग सा रंग है" जब वे पूरे भारत की उन कविताओं पर काम कर रहे थे जो आजादी के बाद लिखी गई हैं, उनका वह अनूदित संग्रह "ए पोयम ए डे" के नाम से प्रकाशित हुआ है, और उसमें उन्होंने उत्तर पूर्व की रचनाशीलता को बहुत प्रेम और आदर के साथ प्रस्तुत किया है।

हमारी दूसरी प्रेरणा हमारे सामने सोशल मीडिया पर कुछ खास लोगों की बोड़ो अंचल से रचनात्मक सक्रियता ने हमें प्रभावित भी किया, हैरान भी किया और प्रेरित भी किया, तो कुल मिलाकर इन दो पहलुओं ने इस अंक की वैचारिक नींव तैयार की। उसके बाद बोड़ो रचनाजगत की प्रमुख हस्ताक्षर जैश्री बोड़ो के साथ संवाद से जब ऐसे किसी अंक का विचार बनने लगा तो हम रचनात्मक ऊर्जा से भर गए।

तो अब इस अंक पर आते हैं, जब इस अंक के लिए कविताएं, कहानियाँ, लेख आने शुरू हुए, हम अपने विचार, निर्णय और सपने को मूर्त होता देखने लगे, इस प्रक्रिया में एक भी क्षण ऐसा नहीं था, जब हमें इस रास्ते के चुनाव पर कोई अफसोस हुआ हो, जबकि हुआ यह कि हम चमत्कृत होते रहे, आनंद से भरते रहे। जैसे कोई साहित्यिक खजाना हमारे हाथ लग गया हो, किसी ऐसे अज्ञात द्वीप पर पहुंच गए हों जहां के रचनायमक आनंद से प्राय: लोग, (और हम तो यक़ीनन) अपरिचित से रहे हों।

यह रचनात्मक आनंद की यात्रा, उसका प्रतिफल हिंदी पाठकों के समक्ष रखते हुए हम संतोष का अनुभव कर रहे हैं। नज़रिया इस रचनात्मकता की सकारात्मकता का निमित्त मात्र है, पूरा श्रेय जैश्री बोड़ो को है। नज़रिया की संसाधनात्मक सीमाओं के साथ उनकी महत्तर मेहनत और साहित्य सेवा यथेष्ट न सही, यथासंभव पहुंच, प्रभाव बना पाएगी, ऐसी कामना और अपेक्षा हम करते हैं।

अतिथि संपादक के कलम से

भाषा और साहित्य दोनों का एक गहरा रिश्ता है। जिस समुदाय का साहित्य नहीं उस समुदाय की उन्नति नहीं और भाषा जीवित रहती है साहित्य के जरिये। भारत में इतने सारे समुदाय हैं, सबकी अलग अलग भाषा हैं, बोली हैं। उनमें से भारत के संविधान में सिर्फ 22 भाषाओं को ही सांविधानिक मान्यता मिली है और बोडो भाषा को भी सांविधानिक भाषा के रुप में 2005 में स्वीकार किया गया।

बोडो समुदाय पूर्वोत्तर भारत का सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय हैं। उनके रहन-सहन, खान-पान, रीति-रीवाज, पहनावा सबसे अलग है। धर्म-संस्कृति सबसे अलग। हालांकि इतिहास में यह लिखा गया कि बोडो समुदाय का पहले बहुत बड़ा राज्य था लेकिन बोडो-कसारी का अंतिम राजा इरागदाव यानी गबिंद चन्द्र की मृत्यु के बाद ब्रिटिश साम्राज्य ने ड्रॉक्टिन अफ लेपस अधिनियम के अंतर्गत बोड़ो राज्य को अपने अधीन ले लिया था। उसके बाद बोडो समुदाय का इतना शोषण होने लगा की बोडो समुदाय लगभग विलुप्त होने के कगार पर आ गया। तभी बोडो युवायों ने कलम पकडी, अपनी भाषा में साहित्य रचना की, अलग बोडोलेण्ड की मांग करके आंदोलन किया और आज दुनिया में पहचाने जाने वाले समुदायों मे से एक बन गया।

भारतवर्ष में इतने सारे समुदाय हैं, सबकी अपनी अपनी भाषा हैं पर उन सबको जानना हमारे लिये असंभव है, उन भाषाओं का बोल पाना नामुमकिन हैं। लेकिन हमारे भारतवर्ष में सबसे अधिक जाने वाली भाषा हिन्दी है और हिन्दी के माध्यम से हम दुसरे समुदाय के साहित्य को पढ़ सकते हैं, उनके धर्म-भाषा-संस्कृति को जान सकते हैं। 2005 से सांविधानिक भाषा होने के बाद ही दूसरी भाषा के साहित्य को बोडो भाषा में अनुवाद किया जा रहा हैं लेकिन बोडो साहित्य को दूसरी भाषा में पहुंचाने के काम में हम पीछे रह गये हैं। जिसकी वजह से बोडो साहित्य अन्य भाषाओं के साहित्य से अभी भी पीछे हैं। इसका मुख्य कारण यहीं है कि बोडो भाषा से अन्य भाषा में अनुवाद करने वालों की कमी।

नज़रिया के एक अंक को बोडो साहित्य विशेषांक बनाने का प्रस्ताव मिला और मैंने भी झट से हामी भर दी। बोडो लेखकों से लेख मांगने की जिम्मेदारी मेरे कंधे पर थी, लेकिन सबसे बड़ी मुश्किल थी लेख हिन्दी में मिलना। क्योंकि हमारे बोड़ो लेखक लोग हिन्दी में बात तो

कर लेते हैं, पढ़ भी सकते हैं, समझ भी सकते हैं, लेकिन खुद के लेख को हिन्दी में अनुवाद करके देना सबसे बड़ी मुसीबत थी। लेखकों के लेख का अनुवाद करने की जिम्मेदारी मैंने ली और कुछ लेखकों ने खुद अनुवाद करवाकर भेजा था। अनुवाद करने के काम में मुझे मेरी लेखिका सहेली साधना ब्रह्म, रुबिला बसुमतारी और साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार विजयी बिजितगोरा भाई ने मदद की मैं आजीवन आभारी रहुंगी। "नज़रिया" के इस अंक से हिन्दी भाषा के लोगों को बोडो समुदाय की भाषा, संस्कृति से परिचित कराने की कोशिश की गई है। धर्म, खान–पान, संस्कृति सबको एकसाथ जोड़कर समुदाय का एक परिचय देने की कोशिश की गई है। मुश्किलें बहुत आई, इसलिये वक्त पर पत्रिका को भी नहीं ला सकी। फिर भी आशा करती हूँ नज़रिया के इस अंक से हमारी जो कोशिश हैं वह रंग लायेगी।

अतिथि संपादक बनकर नजरिया परिवार के एक सदस्य बनाने का जो दु:साहस मित्र दिनेश चारण जी और दुष्यंत जी ने किया उसके लिये आभार व्यक्त करती हूँ। सबको धन्यवाद–

जैश्री बोरो

सूचीपत्र

(लेख भाग)

1.	खेराई बोडो लोगों का धार्मिक त्योहार		09
2.	स्वदेशी आस्था का पुनरोद्धार: बोड़ो समाज ...	डॉ. मंगलसिंह हाज़ोवारी	13
3.	बोड़ो लोगों की पोशाक और आभूषण	– प्रो. (डॉ.) इंदिरा बोड़ो	20
4.	लोक साहित्य के रूप और बोडो लोक साहित्य ...	– अनिल कुमार बोरो	27
5.	बोड़ो साहित्य सभा के जन्म का इतिहास...	– तरेन बोड़ो	37
6.	बोड़ो लोगों का त्योंहार	– उत्तरा बैसोमुथियारी	44
7.	आसाम के आदिवासी समाज में शादी प्रथा	– जैश्री बोरो	48
8.	बोडो लोगों का कुल में प्रवेश कराने की प्रथा	– लीला बसुमतारी	57
9.	बोडो साहित्य का एक संक्षिप्त इतिहास	– राखाउ बसुमतारी	60
10.	बर' लेखिका : एक सूची	– डॉ. लाइश्री महिलारी	64
11.	अलग बोडोलैंड राज्य की मांग: कारण और प्रभाव	– डॉ. सुबुंछा मोसाहारी	68
12.	हाइब्रिड संस्कृति और बोडो पर इसका प्रभाव: ...	– डॉ. सुनील फुकन बासुमतारी	74
13.	बोडो सामाजिक संस्कृति	– भबानि बाग्लारी	77
14.	कृषि कार्य अथवा वर्षाकालीन युद्ध	– भार्जिन जेक'भा मोसाहारी	85
15.	मौसम और बोड़ो लोगों की खेती	– सोरजिला औवारी	92
16.	कपड़े बुनने में बोडो महिलाएं और वर्तमान स्थिति	– अनिला बसुमतारी	102

(कविता भाग)

अंजु
अनिल बोरो
अरबिंदो उजीर
रुबिला स्वर्गीयारी
सुमित्रा बसुमतारी
मीरा ब्रह्म
सनजिब बसुमतारी
गीतिका बसुमतारी
माधबी बोरो
बिजित गयारी
अनिला स्वर्गीयारी
रीता बोरो
अनिता ब्रह्म
दीपमणि बोरो
बारदै सिला नारजारी
अजित बसुमतारी
बनमालि बसुमतारि
मनालिसा बसुमतारि
धनश्री स्वर्गियारी
धीर्ज्यु ज्योति बसुमतारी
साधना ब्रह्म
शान्ति बसुमतारी
माइनावस्त्रि दैमारि
अमर खुंगुर बोरो
रश्मि चौधूरी
रुबिला बसुमतारी
कम्फु खुंगुर ब्रह्म
सुनिटि बसुमतारी
दैमु बसुमतारी
धीरा बसुमतारी

.....

(कहानी भाग)

1. आबारी – ईशान मसाहरी
2. धेत मुर्ख – नन्देश्वर दैमारी
3. किस रास्ते से – पूर्ण ब्रह्म
4. मेरे गाँव में – बिनिता उजिर बसुमतारी
5. बुढ़ा सारिका की पूकार – प्रविन बसुमतारी

6. राज – दुलु रानी बोरो
7. तकदीर – प्रतिमा नन्दी नारजारी
8. शादी का प्रमाणपत्र – मूल–बेनुधर बसुमतारी
9. अन्धेर प्रावस्था – रंजालि बसुमतारी
1०. फेसबुक – डॉ. बिजितगिरि बसुमतारी
11. एम.बी.बी.एस. – विद्यासागर नारज़ारी
12. और कब तक..... – आदा राम बसुमतारी
13. जीवन सहरा का खानाब दोश – जैश्री बोरो
14. नाविक – रनजय ब्रह्म
15. आलाइस्री – बिजित गोरा रामसियारी
16. नेशनल हाईवे – 2 – डेइजी मुसाहारी
17. हम क्या कर सकते हैं – फनीन स्वरगियारी
18. थेमना सेठ – शोभाराम बसुमतारी
19. इन्दि का चादर – साधना ब्रह्म
2०. अनुभव – सनजीब बसुमतारी
21. बिखरा हुआ परिवार – जेनेभा मुछाहारी
22. लेखक और अनुवादक परिचय

खेराई बोडो लोगों का धार्मिक त्योहार

परिचयः खेराई पूजा बोडो लोगों का सबसे बड़ा धार्मिक त्योहार है। यह आशा और इच्छा का प्रतीक है जो उनके बीच प्रचलित है निजी जीवन के कल्याण के लिए अनादि काल से वे साल में एक या दो बार सामूहिक रूप से खेराई पूजा करते हैं। व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों के कल्याण के अलावा फसलों अच्छी फसल के लिए खेराई पूजा की जाती है। बोडो आमतौर पर कृषि पर निर्भर हैं। इसलिए खेती से पहले और बाद में वे खेराई पूजा करते हैं और खेती में सफलता के लिए विभिन्न देवी-देवताओं को प्रसन्न करते हैं। खेराई पूजा बहुत महंगी और वीस्तृत भी है। आर्थिक रणनीति के कारण बोडो लोग बार बार और नियमित रूप से खेराई पूजा नहीं करते हैं।

हालांकि खेराई की उत्पत्ति का पता लगाना मुश्किल है फिर भी बोडो-कचारी की कुछ किंवदंतियां और लोककथाएं इसके बारे में कुछ बताती हैं पुराने दिनों में जाराफागला नाम का एक प्रौढ़ व्यक्ति था। उनके सात विवाहित पुत्र थे। जाराफागला अपनी सबसे छोटी बहू को दूसरी बहूओं से ज्यादा प्यार करता था। जिसे देखकर बाकी बहूयें जलती थी और गाँव वालें भी इस बात को लेकर तरह तरह की आफवायें फैलाते थे। इस बात पर छोटी बहू मंगली बहुत ही दुखी होने लगी और वह अपने ससुराल वालों के रवैये को बर्दाश्त न कर पाने की वजह से एक फैसला ले लिया। वह घर से गायब हो गई। अपनी बहू के इस तरह चले जाने से जाराफागला बहुत दुखी हुआ और उसे सभी दिशाओं में खोजा लेकिन उसका पता नहीं चल सका। इसी तरह ढूँढते ढूँढते वह एक सन्यासी के पास पहुँच गया और उस सन्यासी ने ही उसे अपनी बहू को वापस पाने के लिये एक उपाय सुझाया। उन्होंने एक खेराई पूजा की व्यवस्था करने के लिये जाराफागला को बताया और बोला की उस खेराई पूजा में उसकी बहू एक अलग रुप में आयेगी। बाथौ के उपासक का मानना है कि खेराई शब्द दो ध्वनियों खे और राई का एक संयोजन है जिसका अर्थ है पूजा या मुख्य देवता बाथौ के समक्ष जप। बोड़ो कछारी के बाथौ बोराई को खारिया बोराइ खरिया बुरै के नाम से भी जाना जाता है जिसका अर्थ है गुप्त बूढ़ा।

इसलिए बोडो लोगों का मानना है कि खरिया पूजा ''खरिया बोराई'' के नाम पर की जाती है जो सभी गुणों से संपन्न है। खेराई पूजा में बांस की एक छोटी सी सीमा से घिरे ''बोराइ बाथौ'', सिजौ नामक कैक्टस के फूल, फल और कुछ अनाज चढ़ाया जाता है। अलग- अलग पत्ते और तुलसी के पत्तों को पानी के साथ एक शांति जल बनाया जाता है। अगरबत्ती और धुना; एक छोटे से धूनादानी में जला हुआ